6. सामूहिक सरल विवाह: परिषद् निर्धन लड़कों तथा लड़कियों के लिए सामूहिक सरल विवाह का आयोजन करती है। प्रतिवर्ष लगभग 1000 निर्धन युगलों के विवाह की व्यवस्था की जाती है।

7. ज़रूरतमंद महिलाओं व बच्चों के लिए कानूनी सहायता: समाज द्वारा प्रताड़ित एवं नज़रअन्दाज की गई महिलाओं एवं बच्चों हेतु नि:शुल्क कानूनी सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य है।

8. राहत कार्य: परिषद् अपने नियमित कार्यों के अतिरिक्त राष्ट्रीय आपदाओं में सदैव आगे बढ़ कर भाग लेती रही है। उदाहरण के लिए जनवरी 2001 को गुजरात में जब भूकम्प आया तब भारत विकास परिषद् सहायता के लिए आगे आई तथा भवन एवं स्कूल बनवाने तथा विकलांग हो गये लोगों को कृत्रिम अंग लगाने में विशेष योगदान दिया। 1.89 करोड़ रुपये की नगद राशि की सहायता भी दी गई। दिसम्बर 2004 में आई सुनामी आपदा में राहत कार्य हेतु परिषद् ने एक करोड़ राशि की सहायता की थी।

इसी प्रकार परिषद् ने लातूर में भूकम्प, कारगिल युद्ध, उड़ीसा में विनाशकारी साइक्लोन, राजस्थान में सूखा, असम व बिहार की बाढ़ तथा लेह में बादल फटने एवं अत्तराखंड में भीषण वर्षा से हुई क्षति के लिए धन व सामग्री द्वारा सहायता प्रदान की। अब उत्तराखंड में एक करोड़ से अधिक की लागत के स्थाई प्रकल्पों पर कार्य चल रहा है।

स्थाई प्रकल्प

देश में परिषद् की शाखाओं द्वारा 1,460 स्थाई प्रकल्प चलाये जा रहे हैं जिनके द्वारा समाज के सभी वर्गों को वर्ष भर सेवायें उपलब्ध रहती हैं। इन प्रकल्पों में अस्पताल, क्लीनिक, फिजियोथैरेपी केन्द्र, मोबाईल वैन, पैथोलॉजी लैब, ब्लड-बैंक, जेनरिक दवा केन्द्र, शैक्षणिक संस्थान, जल मंदिर, प्रशिक्षण केन्द्र इत्यादि सम्मिलित हैं।

जन सम्पर्क

1. संस्कृति सप्ताह: इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शाखायें प्रतिवर्ष लगभग 4,000 कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से परिषद् के सदस्य समाज में परिषद् की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हैं।

2. सेमीनार: भारत विकास परिषद् राष्ट्रीय एवं मानव कल्याण तथा ज्वलन्त विषयों पर उच्च शिक्षा संस्थानों में संगोष्ठी कर युवकों में भारतीय संस्कृति और संस्कार का प्रचार-प्रसार कर रही है।

3. प्रकाशन: परिषद् से सम्बन्धित साहित्य-प्रकाशन के साथ-साथ, भारत विकास परिषद् प्रत्येक मास द्विभाषी पत्रिका **'नीति'** तथा त्रैमासिक पत्रिका **'ज्ञान-प्रभा'** भी प्रकाशित करती है। परिषद् के कार्यों की समुचित जानकारी हेतु एक वेबसाइट www.bvpindia.com भी उपलब्ध है।

4. कॉरपस फण्ड: परिषद् के प्रकल्पों एवं सहायता कार्यों का आर्थिक आधार सुदृढ़ करने हेतु, एक कोष की स्थापना की गई है। इस कोष की पूर्ति के लिए विकास रत्न/विकास मित्र योजना प्रारम्भ की गई है, जिसके लिए क्रमश: एक लाख एवं ग्यारह हज़ार रुपये की राशि परिषद् को दान दी जाती है।

भारत विकास परिषद्

भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लाक, पावर हाउस के पीछे, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

दूरभाष: 27313051, 27316049 फैक्स-011-27314515 ईमेल-bvp@bvpindia.com वेबसाइट-www.bvpindia.com

भारत विकास परिषद् से सम्बन्धित प्रत्येक जानकारी हेतु परिषद् की वेबसाइट को देखें।

Printed by : Yashika Printers # 9818383198

सम्पर्क ◊ सहयोग ◊ संस्कार ◊ सेवा ◊ समर्पण

भारत विकास परिषद्

Bharat Vikas Parishad

परिचय

मातृभूमि की सेवा में समर्पित प्रबुद्ध नागरिकों का एक विशिष्ट संगठन

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

स्वस्थ-समर्थ-संस्कारित भारत ★ Swasth-Smarth-Sanskarit Bharat

भारत विकास परिषद्

स्वस्थ-समर्थ-संस्कारित भारत

भारत विकास परिषद् समाज में विभिन्न व्यवसायों व कार्यों में लगे श्रेष्ठतम लोगों का एक राष्ट्रीय, अराजनैनिक, नि:स्वार्थ, समाजसेवी एवं सांस्कृतिक संगठन है। इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य भारतीय समाज का सर्वांगीण विकास करना है। इस विकास में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राष्ट्रीय, एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार का विकास समाहित है। इस हेतु परिषद् सम्पन्न वर्ग को समाज के कार्य के लिए प्रेरित कर सेवा एवं संस्कार द्वारा निर्धन लोगों के उत्थान के कार्य में लग रहा है।

महादेवी वर्मा, लाला हंसराज गुप्ता, डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व परिषद् से जुड़े रहे हैं तथा वर्तमान में स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री जगमोहन, बिहार के पूर्व राज्यपाल न्यायमूर्ति एम रामा जॉयस, न्यायमूर्ति एस. पर्वता राव, न्यायमूर्ति डी.आर धानुका आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति परिषद् से जुड़े हुए हैं। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, न्यायमूर्ति हंस राज खन्ना एवं श्री गोविन्द नारायण आई.सी.एस. जैसी विख्यात विभूतियां परिषद् की संरक्षक रह चुकी हैं। 1963 में दिल्ली में प्रारम्भ हुई एक शाखा से अब समस्त देश में इसकी 1200 से अधिक शाखाएँ हैं। इसके 53,000 परिवार अर्थात् लगभग एक लाख छ: हज़ार सदस्य (परिषद् में पति-पत्नी समान रूप से भागीदार हैं), नि:स्वार्थ भाव से सामाजिक एवं सेवा कार्यों में जुटे हैं।

कार्य की दृष्टि से देश को 17 क्षेत्रों व 59 प्रांतों में बांटा गया है। अब कोई भी प्रांत परिषद् की शाखाओं से अछूता नहीं है।

परिषद् की सम्पूर्ण गतिविधियां पांच सूत्रों के आधार पर चलती हैं। ये हैं-सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण।

प्रकल्प एवं कार्यक्रम

परिषद् के प्रकल्पों एवं कार्यक्रमों को संस्कार तथा सेवा में विभाजित किया गया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है:-

संस्कार

1) राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता: देश भक्ति के गीतों की यह प्रतियोगिता सर्व प्रथम वर्ष 1967 में आयोजित की गई थी। देश भक्ति के गीतों से परिपूर्ण इस प्रतियोगिता ने वास्तव में छात्रों के मध्य भारत विकास परिषद् को लोकप्रियता दिलाई और पहचान बनाई है। इसमें प्रतिवर्ष भारत के सभी प्रान्तों से लगभग 5000 से अधिक विद्यालयों के छात्र भाग लेते हैं।

पिछले वर्षों में भारत के अनेक पूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन, श्री ज्ञानी जैल सिंह व श्री नीलम संजीव रेड्डी ने अध्यक्षता कर इन कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाई है।

2) भारत को जानो प्रतियोगिता: इस प्रतियोगिता का उद्देश्य स्कूली छात्रों में अपने देश, संस्कृति तथा धर्म के विषय में जानकारी बढ़ाना है। इस प्रतियोगिता के लिये सम्पूर्ण देश में प्रतिवर्ष एक लाख से अधिक "भारत को जानो" पुस्तकें विद्यार्थियों में वितरित की जाती हैं व लगभग 8 लाख छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं।

3) गुरू वंदन छात्र अभिनंदन: इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परिषद् के सदस्य विद्यालयों में जाते हैं, तथा प्रतिभाशाली छात्रों व गुरूजनों का सम्मान करते हैं। एक अप्रैल से 15 अक्टूबर तक की अवधि में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। प्रतिवर्ष 4500 विद्यालयों के लगभग 15 लाख विद्यार्थी इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं।

4) बाल, युवा, परिवार व प्रौढ़ संस्कार योजना: प्रति वर्ष हजारों बालक/ बालिकायें परिषद् द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविरों में भाग लेते हैं। विद्यालयों के छात्रों को लगभग एक सप्ताह तक इन शिविरों में उपदेश, योग, खेल तथा देश भक्ति एवं धार्मिक गीतों के माध्यम से संस्कार प्रदान किए जाते हैं। इसके साथ ही युवाओं, परिवारों एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए संस्कार शिविरों का आयोजन किया जाता हैं।

5) राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान प्रतियोगिता: बच्चों में देश भक्ति का भाव जागृत करने हेतु परिषद् कई वर्षों से 'वन्देमातरम् सम्पूर्ण गायन' प्रतियोगिता आयोजित करती रही है। विद्यार्थियों में संस्कृत भी लोकप्रिय बने इसके लिए वर्ष 2005-06 से विद्यार्थी संस्कृत भाषा में देश भक्ति के गीतों के साथ लोक गीतों का गायन करते हैं। इस प्रतियोगिता में लगभग प्रतिवर्ष 3000 विद्यालयों के छात्र भाग लेते हैं।

6) गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस: गुरू तेग बहादुर बलिदान दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद् अनेक वर्षो से सभाओं एवं प्रदर्शनियों का आयोजन कर महान सिक्ख गुरू के प्रति आदर व सम्मान प्रदर्शित करती हैं

सेवा

1. विकलांग सहायता एवं पुनर्वास योजना: परिषद् ने सन् 1990 में "विकलांग सहायता एवं पुनर्वास योजना" को एक राष्ट्रीय प्रकल्प के रूप में प्रारम्भ किया। इस योजना के कार्यान्वयन के लिए आज समूचे देश में 13 विकलांग सहायता एवं पुनर्वास केन्द्र कार्य कर रहे हैं। इन विकलांग केन्द्रों के माध्यम से प्रतिवर्ष लगभग 20000 विकलांग बन्धुओं को कृत्रिम अंग नि:शुल्क प्रदान किये जाते हैं। वर्ष 1995 में परिषद् के दिल्ली केन्द्र तथा वर्ष 2004 में लुधियाना केन्द्र को भारत के राष्ट्रपति महोदय ने विकलांगों की विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। लुधियाना केन्द्र को वर्ष 2007 में प्रधानमंत्री द्वारा 'फिक्की पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

2. वनवासी सहायता योजना: भारत विकास परिषद् देश के 8 करोड़ वनवासी बन्धुओं की सहायता हेतु अथक प्रयत्न कर रही है। परिषद् ने इनके लिए अस्पताल, विद्यालय, पुस्तकालय, व्यावसायिक शिक्षा केन्द्र इत्यादि प्रारम्भ करने में सहायता प्रदान की है।

3. ग्राम/बस्ती विकास योजना: इस योजना के अन्तर्गत शहरों में स्थित मलिन बस्तियों तथा ग्रामों में सेवा कार्य किए जाते हैं। समन्वित ग्राम विकास के लिए परिषद् ने 30 गांवो को गोद लिया है। अभी तक 14 गांवों में कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इनमें से, ग्राम 'मोहब्बतपुर' (हरियाणा) ने 2008 में राष्ट्रपति पुरस्कार अर्जित किया है।

4. पर्यावरण (हरा-भरा भारत): प्रतिवर्ष लगभग 1.50 लाख पौधे लगाये जाते हैं। शहरों तथा उप नगरों में तुलसी तथा नीम के पौधों का वितरण नियमित रूप से किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्लास्टिक के उपयोग को रोकने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं।

5 स्वास्थ्य: भारत विकास परिषद् ने सम्पूर्ण देश में स्थाई रूप से अनेक चिकित्सालय, रक्त बैंक, एम्बुलैंस इत्यादि का प्रबन्ध किया है। समय-समय पर शाखाएँ योग शिविर, रक्तदान शिविर तथा अन्य प्रकार के चिकित्सा सहायता शिविरों का आयोजन करती हैं। कोटा (राजस्थान) में परिषद् का 220 बिस्तरों का एक सुपर स्पेशियलिटी हास्पिटल भी है, जिसमें प्रति वर्ष लगभग दो लाख रोगियों का उपचार किया जाता है। इसी प्रकार लुधियाना में भी एक चिकित्साल्य कार्यरत है। अन्य केन्द्रों में चडीगढ़ का डायग्नोस्टिक केन्द्र प्रमुख है जिसमें प्रतिवर्ष तीन लाख से अधिक रोगी सुविधा प्राप्त करते हैं।